UGC CARE LISTED
ISSN No.2394-5990

संशोधक

वर्ष : ९१ • डिसेंबर २०२३ • पुरवणी विशेषांक ०६

G20
भारत 2023 INDIA

।। श्री विश्वनाथो विजयते ।।
स्थापना : ९ जानेवारी १९२७

प्रकाशक : इतिहासाचार्य वि.का.राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे

UGC CARE LISTED
ISSN No. 2394-5990

इतिहासाचार्य वि. का. राजवाडे मंडळ, धुळे
या संस्थेचे त्रैमासिक

।। संशोधक।।

पुरवणी अंक ६ – डिसेंबर २०२३ (त्रैमासिक)

- शके १९४५
- वर्ष : ९१
- पुरवणी अंक : ६

संपादक मंडळ

- प्राचार्य डॉ. सर्जेराव भामरे
- प्राचार्य डॉ. अनिल माणिक बैसाणे
- प्रा. डॉ. मृदुला वर्मा
- प्रा. श्रीपाद नांदेडकर

अतिथी संपादक

- डॉ. प्रदीप माणिकराव शिंदे
- प्रा. डॉ. सुभाष वाघमारे
- प्राचार्य डॉ. राजेंद्र मोरे

*** प्रकाशक ***

श्री. संजय मुंदडा

कार्याध्यक्ष, इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे ४२४००१

दूरध्वनी (०२५६२) २३३८४८, ९४२२२८९४७१, ९४०४५७७०२०

कार्यालयीन वेळ

सकाळी ९.३० ते १.००, सायंकाळी ४.३० ते ८.०० (रविवारी सुट्टी)

मूल्य रु. १००/-

वार्षिक वर्गणी रु. ५००/-, आजीव वर्गणी रु. ५०००/- (१४ वर्षे)

विशेष सूचना : संशोधक त्रैमासिकाची वर्गणी चेक/ड्राफ्टने 'संशोधक त्रैमासिक राजवाडे मंडळ, धुळे' या नावाने पाठवावी.

अक्षरजुळणी : सौ. सीमा शिंत्रे, वारजे-माळवाडी, पुणे ५८.

महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाने या नियतकालिकेच्या प्रकाशनार्थ अनुदान दिले आहे. या नियतकालिकेतील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.

22. 'विश्वज्योति बापू' खंडकाव्य में चित्रित विश्वशांति का संदेश

- डॉ. युवराज माने ---------- 85

23. विश्वशांति और विकास में महेंद्र भटनागर की कविताओं का योगदान

(कविता –गंगा खंड दो के संदर्भ में)

- डॉ. हेमलता काटे ---------- 88

24. विश्वशांति एवं विकास में हिंदी साहित्य का योगदान

- डॉ. भूपेंद्र सर्जेराव निकाळजे ---------- 92

25. विश्वशांतिः भारतीय संस्कृति का मूलाधार (कमलेश्वर के उपन्यासों के आधारपर)

- प्रो. डॉ. अनुप दळवी ---------- 97

26. हिंदी गजलों में व्यक्त शांति, प्रेम और सदभाव की भावना

-प्रा. मारुती दत्तात्रय नायकू ----------100

27. विश्व शांति एंव विकास में हिंदी साहित्यकारों का योगदान

-डॉ. बेबी श्रीमंत खिलारे ----------105

28. सांप्रदायिकता की दाहकता में शांति और भाईचारा का संदेश देता 'जख्म हमारे'

-सुशील अशोक हुपरीकर ----------108

29. विश्वशांति और विकास में हिंदी काव्य का योगदान 'राष्ट्रसंत तुकडोजी के संदर्भ में'

-डॉ.अलका निकम–वागदरे ----------111

30. विश्वशांति एवं विकास में संस्कृति का योगदान

-प्रो. अनिल अर्जुन अहिवले ----------114

31. विश्व शांति और विकास में हिंदी साहित्य की भुमिका

- डॉ. शहाजी शामराव जाधव ----------117

32. विश्वशांति एवं विकास में समकालीन ग़ज़ल साहित्य का योगदान

-प्रा. श्रीमति मुल्ला राबन खुदाबक्ष ----------120

विश्वशांति एवं विकास में हिंदी साहित्य का योगदान

डॉ. भूपेंद्र सर्जेराव निकाळजे
हिंदी विभाग,
रयत शिक्षण संस्था का
राधाबाई काळे महिला महाविद्यालय,अहमदनगर.

साहित्य समाज को संस्कारित करने के साथ-साथ जीवन मूल्यों की शिक्षा देता है, समाज में किस तरह आचरण करणा कैसे रहना आदि का ज्ञान साहित्य के द्वारा प्राप्त होता है, साहित्य में युग बोध का चित्रण साहित्यकार करता है, प्रत्येक कालखंड की विसंगतियों, विरोधाभासों को साहित्य में रेखांकित कर समाज को संदेश देने का कार्य साहित्य करता है, जिससें समाज में सुधार आता है, और सामाजिक विकास को गति मिलती है, यह निर्विवाद है कि साहित्य द्वारा समाज में परिवर्तन होता है। समाज और साहित्य का घनिष्ट संबंन्ध है, प्रत्येक साहित्यकार युग का प्रतिनिधित्व करता है, उस युग को सूधारने का कार्य सदीयों से साहित्य के द्वारा हो रहा है। प्राचिनकाल से लेकर आजतक समाज के भीतर जब जब अनिष्ठता दिखाई देती तब तब साहित्यकार अपनी कलम से समाज को सही दिशा देने का कार्य किया हैं। समाज के भीतर मानवतावाद को बढावा़ देने का कार्य यह साहित्य के द्वारा होता रहा है। लोग अमन और चैन से इस भूमि पर रहे ऐसी भावना साहित्यकारों की रही और उस प्रकार का साहित्य का निर्माण होता रहा हैं। समाज सुधार का चित्रण और समाज के वास्तविक प्रसंगों की जीवंत अभिव्यक्ति साहित्य के द्वारा ही संभंव हैं। साहित्य समाज के नवनिर्माण का कार्य करता हैं। अमीर खुसरों से लेकर तुलसी, कबीर जायसी, रहीम, निराला, प्रेमचंद, रजनी तिलक, डॉ. जयप्रकाश कर्दम जैसे रचनाकारों ने समाज नवनिर्माण में अभूतपूर्व योगदान दिया हैं।

आज के युग में सबसे बडी मानव को आवश्यकता क्या है? तो वह 'शांन्ति' रही है, व्यक्ति को, परिवार को, समाज को, देश को, विश्व को और पूरे ब्रम्हाण्ड को सबसे अधिक आवश्यकता विश्वशांति की हैं। हाल ही में हमने रशिया और युक्रेन, इजराईल- गाजा के भितर युद्ध देखा तो पूरा विश्व भयभीत हो गया इसका परिणाम हमे भी भुगतना पड़ा। वैद्यकीय शिक्षा लेनेवाले भारतीय छात्र कैसे उस युद्ध से प्रभावित हो गये कुछ की शिक्षा रुक गई और अभी विदेश भेजने की हिंमत भी कोई नहीं कर रहा युद्ध हानिकारक है। मानव को शांन्ति की तलाश है। मनुष्य आरंभ से ही संघर्ष अथवा युद्ध की समाप्ति और शांन्ति की खोज करता है। कभी कभी तो मानव शांन्ति के लिए भी युद्ध करता है। संसार में जब शांन्ति नही होगी तब तक समाज तथा राजनीति में अशांन्ति फैली रही हैं। इतिहास के पन्नों को पढकर हम देखे तो शायद हर युग में सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता शान्ति ही रही हैं। मनुष्य अशांन्ति पर शान्ति की विजय के लिये हजारों सालों से प्रयास करता रहा हैं। परंतु शांतिपूर्ण जीवन का मार्ग यह तथागत गौतम बौद्ध ने दिखाया है।

शांन्ति शब्द 'शम' धातू से बना है जिसके कई अर्थ है, बन्द करना, दूर करना, बुरा प्रभाव हटाना, मना करना, प्रसन्न होना, शमन करना या प्राण हरणा इत्यादी। शांन्ति से तात्पर्य सिर्फ शोर या राजनीतिक हलचल ही नहीं है बल्कि वह एक मानसिक अवस्था है, जो बैर की भावनाओं से रहित बल्कि सार्वजनिक प्रेम से परिपूर्ण है, जिसे बौद्ध धर्म में ङ्गमैत्रीफ कहते हैं। भगवान बुद्ध ने संसार को विश्वशांन्ति का उपदेश दिया था। सभी ने इस मार्ग का अवलंबन किया हैं। बौद्ध धर्म ने मन में शांन्ति का संचार करके उसका बाहर प्रसारण करना चाहता हैं। इस प्रकार उनका काम अन्दर से शुरू होकर बाहर फैलता हैं। गौतम बुद्ध ने अपने जीवन में दु:खों से मानव जाति को मुक्ति चाही है, इसलिए उन्होंने ध्यान धारणा को महत्व दिया है उन्हे जो ज्ञान प्राप्त हुआ उससे उन्होंने समाज को उपदेश दिया वह बौद्ध धर्म में जाना जाता है, बौद्ध धर्म क्या है, तो विश्व में शांन्ति का निर्माण करणा उनका लक्ष्य था। ''बौद्ध धर्म के पास एक ही तलवार है - प्रज्ञा की तलवार और केवळ एक ही शत्रु है अज्ञान। बौद्ध धर्म और शांन्ति का संबंध- कारण कार्य का संबंध है। बौद्ध धर्म के उदय से पहले विश्व के कई देशों में शांति नहीं थी। वहाँ के निवासी अत्यन्त युद्धप्रिय और हिंसा स्वभाव के थे। बाद में इन देशों में जो शांतीप्रियता आई वह धर्म के शांतीवादी उपदेशों के प्रभाव से हुई। इस प्रकार बौद्ध धर्म शांति का

ISSN No. 2394-5990

संबंध आकस्मित न होकर अनिवार्य है। विश्व शांति की स्थापना में बौद्ध धर्म अतीत में एक योगदान देनेवाला साधन रहा है।''[1]

विश्व के प्रमुख धर्मो में बौद्ध धर्म अहिंसा और शांति का आधार हैं। इस धर्म ने मानव लोक कल्याण की भावना को जन्म दिया और शांन्ति का उपदेश देकर सबसे पहले पंचशील के विषय में अवगत किया। समाज में समता, करुणा, बंधुता प्यार के साथ रहना सिखाया। बौद्ध धर्म सुखमय जीवन बिताने का मार्ग प्रशस्त करता है। शान्ति को बनाए रखने का कार्य भगवान गौतम बुद्ध ने अपने उपदेश में किया है।

''सब्बे सत्ता सुखी होन्तु, सब्बे होन्तु च खेमिनो।
सब्बे भद्राणि, पस्सन्तु, मा कचि दुक्ख मागमा।।''[2]

अर्थात सभी सुखी रहे, सभी निरोगी रहे, सभी प्रसन्नचित रहे, किसी को कोई दुःख न हो। बुद्ध ने कार्यकारण के सिद्धान्त के आधार पर बताया कि कुछ भी बिना कारण संभव नहीं है। प्रत्येक वस्तु, विचार, जीव मान्यता, घटना और परंपरा इत्यादि का कोई न कोई कारण जरूर है, अगर गरीबी और पिछडापण है तो उसका भी कोई कारण है। अगर कोई दुःखी और सुखी है तो इसके पिछे भी निःसंदेह कोई न कोई वजह अवश्य है। बुद्ध ने प्रेम अहिंसा, करुणा और मैत्री का संदेश देकर बहुजन हिताय बहुजन सुखाय का संदेश दिया है, विश्व मे शांति का मार्ग एकमात्र गौतम बुद्ध ने दिखाया है। गौतम बुद्ध और विश्वशान्ति का संबंध कार्य कारण का संबंध है। बौद्ध धर्म प्रवेश से पूर्व तिब्बत, एशिया सबसे बलवान सैनिक देश थे। बर्मा, कंबोडिया का पूर्वकालीन इतिहास बताता है यहाँ के निवासी अत्यन्त युद्ध प्रिय और हिंसात्मक स्वभाव के थे। मंगोल लोगो ने एशिया पर हुकुमत की, भारत और चीन के अपवादो को छोड़कर एशिया के अन्य सब राष्ट्र के लोग मूलतः हिंसा प्रिय थे। लेकिन बौद्ध धर्म प्रभाव के कारण शांन्ति और अमन हमे दिखाई देता है। भगवान बुद्ध का मत है की संसार दुःखो से परिपूर्ण है, दुःखो का कारण है दुःखों का अंत संभव है, दुःखों के अंत का मार्ग हैं। चार आर्य-सत्य बौध्द धर्म के सार है। इस आर्य सत्यों से अनासक्ति वासनाओं का नाश, दुःखो का अन्त संभव है। मानसिक शांति, ज्ञान, प्रज्ञा तथा निर्वाण सम्भव हो सकते हैं।[3] भगवान बुद्ध का मत है कि संसार दुःखो से व्याप्त है। इस दुःख का अन्त संभव है। यदि जीवन मे शांति चाहिए तो आठ मार्ग उन्होने बताए है आज हम देखते है. मानव को पर्याप्त धन-सम्पत्ति रहने के बाद भी क्यों शांति नहीं है, शांति नही रहने का क्या कारण है। जिनके पास धन संपत्ति नहीं है उनको भी वर्तमान समय में शांन्ति नहीं है। शांति अगर मानव को कैसे मिले तो भगवान बुद्ध ने मानव को आठ मार्ग कहे है,

1) सम्यक दृष्टि
2) सम्यक संकल्प
3) सम्यक वाक
4) सम्यक कर्मान्त
5) सम्यक आजीविका
6) सम्यक व्यायाम
7) सम्यक स्मृति
8) सम्यक समाधि[4]

बौद्ध धर्म और अंहिसा :

बौद्ध धर्म - मानवता की रक्षा करता है, बौद्ध धर्म शान्ति और अहिंसा का पुरस्कार करता है, निःसंदेह बुद्ध से प्रभावित सम्राट अशोक ने बलिप्रथा, और भोजन के लिए पशुओं की हत्या पर रोक लगाई। उन्होने उपचार व्यवस्था के इंतजाम किए, बरगद तथा आम के पेड लगाए मकुँए खुदवाए और आनंदगृह के जरिये मनुष्यों और जीव जन्तुओ के लिए कल्याण के काम किए। ये बौध्द धर्म का ही प्रभाव था कि अशोक ने केवल खुद ही नही अपितु अपने बेटे और बेटी को भी बौद्ध शिक्षाओं, के प्रसार का जिम्मा सौंपा। इसतरह हिंसा से अहिंसा विश्वशांति की ओर विश्व को ले जाने का कार्य भगवान गौतम बुद्ध ने किया है। तथागत बुद्ध ने समाज मे नई चेतना और वैचारिक क्रांति का संचार किया जिसके परिणामस्वरूप चिन्तन की प्रक्रिया नये सिर से प्रारंभ हुई। बहुजन हिताय बहुजन सुखाय की अवधारणा का सुत्रपात तथागत बुद्ध ने किया है।

हिंदी साहित्य को यदि हम देख तो वह तथागत गौतम बुद्ध के मानवतावाद पर विश्वास करते हुए शांति और अमन का प्रसार करते है इसलिए गौतम बुद्ध ने कहा अंप्प दिप भवो अपना दिपक हमें स्वयं बनना है, इसलिए कबीर अपने दोहो के माध्यम से समाज के भीतर की विषमता को दूर करते हुए समानता की स्थापना पर बल देते है।

जाँति पाति पूछे ना कोई।
हरि को भजे सो हरि होई।।

इस संसार में जाँति पाति के भेदभाव को दूर रखकर मानव को मानव के रूप में देखकर हम अगर जीवन जीते हैं, तो इस संसार में अमन और शांति रहेगी। ऐसे कबीर अपने दोहो के माध्यम से कहते है। कबीर ने गुढ दार्शनिक विवेचना मे फँसने का यत्न नही किया उन्होंने देखा कि मूलरूप में सब धर्म मनुष्यता, दया, परोपकार, दानशीलता, ईश्वर भक्ति, मानवीय प्रेम एवं सहयोग, शांति मे विश्वास करते हैं। लेकिन

धर्म के ब्राह्याचरण एवं पूजा आराधना के प्रकारों को लेकर ही सारा विवाद एवं वैमनस्य है अत: उन्होने हिन्दुओं एवं मुसलमानो के उन सभी बाहरी दिखावे की निंदा की जो मनुष्यता के विरुद्ध जान पडते हैं। साहित्य के माध्यम से समाज के भीतर शांति निर्माण करने का प्रयास साहित्यकार के द्वारा होता है, लेकिन यह इसलिए संभव हुआ जब महात्मा गौतम बुद्ध ने शांति का मार्ग दिखाया उसी के अनुसार साहित्यकारों ने अपने काव्य के दवारा समाज में शांति का मार्ग का प्रसार किया है।

जयशंकर प्रसाद की कामायनी एक ऐसा महाकाव्य है जो जीवन जीने की कला सिखाता हैं। कामायनी का प्रेरक तत्व जीवन के अर्थ की खोज है जो इस महाकाव्य का प्रतिपादय विषय है श्वाश्वत सत्य, सत् असत् वस्तुओ के संघर्ष मे सौंदर्य की झलक लोकहित और लोकानुरंजक के समन्वित रूप की प्रस्तुति और सौंदर्यवृत्ती है। संपूर्ण विश्व के लिए यह आज भी प्रांसगिक श्रद्धा सर्ग की पंक्तियों आज भी संपूर्ण मानव को मानवता को सूत्र मे पिरोकर शांति का पाठ पढ़ाना चाहती हैं।

''औरो को हंसते देखो मनु हंसो और सुख पाओ, अपने सुख को विस्तृत कर लो सबको सुखी बनाओ साहित्य अतीत से प्रेरणा लेता है, वर्तमान को चित्रित करता है और भविष्य का मार्गदर्शन करता है। इस लिए समाज में शांन्ति निर्माण करने का कार्य साहित्यकार करता हैं।''

दलित साहित्य पर बौद्ध दर्शन का प्रभाव है क्योंकी बौद्ध दर्शन समता का पक्षकार हैं। इसलिए दलित साहित्य भी 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' का पालन करता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने समाज के भीतर की विषमता का विरोध किया है उन्होंने सवर्ण ... असवर्ण मानसिकता वाले समाज से अपनी कविता- 'तब तुम क्या करोगे' मे सवाल पूछा है कि व्यवस्था आपके लिए विपरीत हो जाए तब तुम्हारी निष्ठा क्या होगी?

''जला दी जाये समूची सभ्यता तुम्हारी
नोच नोच कर
फेंक दिए जाये
गौरवमय इतिहास के पृष्ठ तुम्हारे
तब तुम क्या करोगे''

यहाँ कवि समाज के भीतर समता चाहता है। इस तरह दलित कवि अपनी कविता के द्वारा अपने जीवन मे जो भोगा सहा उसी को लिखा और इसके पिछे का उद्देश है की हम मानव है और मानव के समान हमें जीवन जीना है समाज में असमानता को दूर करणा आवश्यक है समाज में दलितों की भेड बकरीयों से भी भयानक अवस्था है कुँवे का पानी भेड बकरीया पी सकती है लेकीन दलित के पिने से वह भ्रष्ट हो जाता है इससे मुक्ति पाना दलित साहित्य का लक्ष्य है यह अगर समानता समाज मे निर्माण होगी तो अच्छा होगा।

रजनी तिलक समाज के भीतर फिर एक बार गौतम बुद्ध को चाहती है। युद्ध को नही गौतम बुद्ध शांति चाहते है। हिंसा से दूर रहने का संदेश मानव को देते है 'इसलिए रजनी तिलक 'बुद्ध मचाहिए युद्ध नहीं' क्योकि युद्ध से सारा संसार नष्ट हो जाएगा और बुद्ध से मानवतावादी विचार समाज में रहेगे।

''शांति, ज्ञान करुणा मेरा गहना
युद्ध. क्रूरता, तृष्णा तुम्हारा हथियार
हिरोशिमा की तपड मैं भूलना चाहती है।
तुमने जो मूल बीज
परमाणु युद्ध क्यों बोया।''[6]

गौतम बुद्ध ने अपने उपदेश में शांन्ति, ज्ञान, करुणा को महत्व दिया है। हिंसा का विरोध किया है. अगर विश्व को अच्छा रहना है तो इस संसार में आज जरूरत है, बुद्ध की युद्ध की नहीं ऐसा संदेश रजनी तिलक अपनी कविता के व्दारा देती है। कवि समस्त संसार मे बुद्ध के विचारों की आवश्यकता है ऐसा मानती है।

कवि जयप्रकाश कर्दम अपनी कविता मएक बार फिर आओफ इस कविता के माध्यम से कवि फिर से इस संसार में गौतम बुद्ध की आवश्यकता है विश्वशांति का संदेश देने वाले गौतम बुद्ध को फिर से जन्म लेने का आव्हाण कवि कर रहे है।

''गौतम एक बार फिर आओ।
व्याप्त धरा पर अंधकार है
घृणा, हिंसा, अंहकार है,
गुँज रहा दु:खियो का क्रन्द्र
जीवन चिथडे तार-तार है
द्वेष और मालिन्य मिटाने आओ''[7]

कवि जयप्रकाश कर्दम प्रस्तुत कविता के माध्यम से, गौतम बुद्ध के विचार की आज आवश्यकता समाज के भीतर घृणा, हिंसा, अहंकार दिखाई दे रहा है दु:खियों की गुँज सुनायी दे रही है, समाज के भीतर अशांतता को देखकर कवि फिर से गौतमबुद्ध को आने का आग्रह करते हैं। दलित साहित्य के प्रेरणा स्त्रोत डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर है, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर गौतम बुद्ध को अपना गुरू मानते है, इसलिए डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरने बौद्ध धर्म की दिशा ली हैं। डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर का मूलमंत्र है शिक्षित बनो संघर्ष कर संघटित रहो। इस संदर्भ में डॉ. जयप्रकाश कर्दम लिखते है साठ के दशक में आकर इस स्वर में व्यापकता और तेजी

ISSN No. 2394-5990

आनी शुरू हुई जब कुछ आर्य समाज का प्रसार छोड़कर, डॉ.अम्बेडकर और बुद्ध धर्म के प्रचार में सलग्न होनेवाले और कुछ बाबासाहेब आंबेडकर के क्रांतिकारी विचारों की ऊर्जा लेकर नई पीढ़ी के रचनाकारो ने साहित्य सृजन के क्षेत्र में हस्तक्षेप करना शुरू किया उस दौर की रचनाओं का प्रमुख स्वर डॉ बाबासाहेब अंबेडकर का जयगान भगवान बुद्ध की स्तृति या फिर सामाजिक सामंजस्य और सुधारवादी दृष्टिकोण तक सीमित रहा। इन रचनाओं की सबसे बडी विशेषता यह है । इनमें व्यक्त आक्रोश और विरोध का स्वर तीखा होते हुए भी संयम, शालीन और रचनात्मक है।[8] दलितो को वाणी देने का कार्य डॉ बाबासाहेब आंबेडकर ने किया है। उनके क्रांतिकारी विचारों ने दलितो मे लेखन की उर्जा का निर्माण किया। इसका परिणाम आज दलित साहित्य इतनी ऊँचाईयों पर है।

दलित कवयित्री सुशिला टाकभौरे अपनी कविता' 'लौट जाओ तुम' में दलित समाज की वेदनाओं को अभिव्यक्त करती है, गौतम बुद्ध से प्रभावित महामानव शाहु, फुले, आंबेडकर समाज के भीतर समता को लाना चाहते हैं। इसलिए यह कविता सामने आती है।

''सदियो से संताप सहा
फुले आंबेडकर ने न्याय दिया
समझे तभी हम समता और सम्मान
जागृत विचार-धाराएं हमारी
बहने लगी हे सही दिशा में,
मत समझाओ गलत दिशा का सान''

दलितों ने सदियों से अन्याय अत्याचार सहा है। म.फुले एवं डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर इन्होंने दि्लितो की मुक्ति का किवाड खोल कर उनमें चेतना का काम किया। समता एवं सम्मान की विचारधारा को समाज में प्रभावीत किया जो समाज पहले भूख, अस्पृता से ग्रस्त था, आज वह शिक्षा एक प्राप्त अपनी अलग विचारधारा को लेकर समता में उसका अस्तित्व निर्माण हो गया है। डॉ बाबासाहेब आंबेडकर दलितो के लिए एक मसिहा बनकर आए है। दलितों के जीवन में परिवर्तन लाने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहे है ''अंबेडकरवादी दर्शन एवं विचारधारा से दलित चेतना का जन्म हुआ है। दलित चेतना की निर्मिती दमन और शोषण के प्रतिरोध तथा आत्म-सम्मान एवं अधिकार की मांग से हुई हैं। दलित कविता हिंसा और घृणा से युक्त हिंदू व्यवस्था को नकारकर समता एवं करुणा पर आधारित व्यवस्था की माँग करती है। इस संदर्भ में दलित कविता बौध्द धर्म एवं दर्शन से प्रेरणा ग्रहण करती है।''[10] समाज को सही दिशा देने का कार्य महापुरुषो में युगों युग से किया है। समाज में शांति अमन निर्माण करने का प्रयास आगे साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के द्वारा महापुरुषों के विचारों को आगे बढाया है आज की उपभोक्तावादी मनोशक्ति ने व्यक्ति को आत्मकेन्द्रीत बना दिया है। परिणामस्वरुप उसकी सोच संकीर्ण हो गयी है। नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है साथ ही मानवीय संवेदना लुप्त हो रही है। दिन दहाडे होने वाली हिंसा अशोभनीय घटनाएं शायद मानव को विचलित नहीं करती है। आधुनिक परिवेश में साहित्यकारों के समक्ष अनेक चुणोतियाँ समस्याएँ है जिनका सामना साहित्यकार कर रहें हैं। उसमें समाज और विश्व को सही मार्ग दिखाने का प्रयास हो रहा है।

निष्कर्ष :

विश्व साहित्य का अनुशीलन करने से प्रतीत होता है साहित्य दो तरह का होता है सार्वकालिक साहित्य और समकालिन साहित्य सार्वकालिक साहित्य शाश्वत होता है। जिस पर भूत, भविष्य और वर्तमान का कोई प्रभाव नहीं होता किन्तु समकालीन साहित्य समय में साहित्य को संघर्षो, दस्तको और आलोचनाओं को झेलना और विवशताओं से लडना होता हैं। मानवीय संवेदनाओं से ओत-प्रोत सशक्त रचना कालत्रयी होकर एक स्थान पर ठहर जाती है और पीढ़ी दर पीढ़ी जनता उसका आस्वादन कर संरक्षण पाते हैं।

साहित्य समाज का दर्पन होता है, समाज की वास्तविकता साहित्य में दिखाई देती है। साहित्यकार समाज मे मानवीय मूल्यों को रखना चाहते है। साथ साथ महापुरुषो के विचार भी समाज को देते है- साहित्य में गौतम बुद्ध के विचार हमें दिखाई देते है वे विश्व शांति का संदेश देते है बौद्ध दर्शन जिस सिद्धान्त पर आधारित है उसकी आधार शिक्षा ही अहिंसा एवं शांति है। बुद्ध के समस्त उपदेशों का सार बिना किसी को कष्ट पहुंचाना उसे दया, करुणा, शील और शांति की ओर प्रेरित करना है। वर्तमान परिस्थितियों मे बौद्ध धर्म के अंहिंसा और शांति नीति के अतिरिक्त कोई दूसरा हमारी समस्याओ का समाधान नही कर सकता। आज आतंकवाद, परमाणू शस्त्रीकरण, वैश्विक मंदी, बेरोजगारी आदि की भयानक सम्भावनाओं के बीच लोग अपने आप को अक्सर महत्वहीन अशक्त, और अकेला पाते है। इन समान्याओं का समाधान और विश्व शांति बौद्ध धर्म नीति और अहिंसा से ही संभव है। बौद्ध धर्म विश्वशांति के लिए बेजाड़ है।

संदर्भ :

1) पी.वी बापट, बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष पृष्ठ - 237
2) तथागत बुद्ध स: भन्ते कांशी रत्न, रैदास बौद्ध धर्म शिक्षा मिशन कुरुक्षेत्र हरियाना, 2010

3) डॉ. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, धर्म दर्शन की रूप रेखा (द्वितीय खंड), पृष्ठ 05
4) आ. बलदेव उपाध्याय, बौद्ध दर्शन मीमांसा, पृष्ठ 45
5) ओमप्रकाश वाल्मीकि, सदियों के संताप, पृष्ठ- 49
6) रजनी तिलक - बुद्ध चाहिए युद्ध नही- पृ. 07
7) जयप्रकाश कर्दम- एक बार फिर आओ - पृ. 8
8) हिंदी दलित कविता के पचास वर्ष- डॉ. जयप्रकाश कर्दम- पृ. 37-38
9) सुशिला टाकभौरे- लौट जाओ तुम पृ. 02
10) दलित चेतना की कविताएं- से रामचंद्र एवं प्रवीण कुमार-पृ.-107-108